लोकमत समाचार

वैज्ञानिक अनुसंधान के जरिये समाज का उत्थान

सीएसआईआर के महानिदेशक डॉ. मांडे का कथन

नागपुर। 18 अक्तूबर। लोस सेवा

लोगों में धारणा ऐसी है कि वैज्ञानिक लैब में काम करता है. उसके बाल बड़े और बिखरे हुए होते हैं. उन्हें सामाजिक क्षेत्र से ज्यादा लगाव नहीं रहता. पर ऐसा नहीं है. पब्लिक सपोर्ट से अनुसंधान किया जाता है.

वैज्ञानिक अपनी खोज या अनुसंधान के जरिये समाज के उत्थान के लिए काम करता है. इसी सोच को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने के लिए इंडिया इंटरनेशनल साइंस फेस्टिवल 2019 का आयोजन किया जा रहा है. इस फेस्टिवल में विज्ञान की खोज को जाहिर किया जाएगा. यह जानकारी वैज्ञानिक व औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) के महानिदेशक डॉ. शेखर सी. मांडे ने दी.

ड्रोन 'नीरी-क्षण' का प्रात्यक्षिक देते हुए डॉ. शेखर सी. मांडे. साथ में डॉ. राकेश कुमार व अन्य वैज्ञानिक.

डॉ. मांडे ने बताया कि 5 से 8 नवंबर के बीच कोलकाता में यह फेस्टिवल होने वाला है. इसमें यह पांचवां आयोजन है. इसके पहले लखनऊ में यह फेस्टिवल आयोजित किया गया है. देश भर के सांसदों से अपील की गई है कि वे 5 से 10 मेधावियों को फेस्टिवल में लाएं.

नीरी के निदेशक डॉ. राकेश कुमार ने बताया कि विद्यार्थियों का विज्ञान के प्रति रुझान कम होते जा रहा है. विज्ञान के क्षेत्र में जब रोजगार बढ़ेगा, तभी इसके प्रति विद्यार्थियों में लगाव भी होगा. विज्ञान को रोजगारपरक बनाने पर जोर दिया जा रहा है. स्टार्टअप में कारगर साबित हो रहे हैं. साइंस फेस्टिवल एक तरीके से विज्ञान का कुंभ मेला है. नीरी के प्रधान वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रकाश कुंभारे मौजूद थे. चर्चा के पूर्व मांडे ने नीरी में स्मृति वन का उद्घाटन किया.

नीरी-क्षण से आसमान के वायु प्रदूषण की जांच करेंगे

नीरी के वैज्ञानिकों की तरफ से तैयार ड्रोन बेस्ड एयर पोल्यूशन मॉनिटरिंग सिस्टम तैयार किया गया है, जिसे 'नीरी-क्षण एक्यू' नाम दिया गया है. इससे जमीन से 500 मीटर ऊंचाई तक की हवा की गुणवत्ता की जांच की जा सकती है. इसका प्रात्यक्षिक कार्यक्रम के दौरान किया गया. इसे निदेशक डॉ. राकेश कुमार की निगरानी में मुख्य वैज्ञानिक व ईआरएमडी विभाग के प्रमुख डॉ. नितिन लाभशेटवार, वैज्ञानिक पीयूष कोकाटे, डॉ. अनिर्बाण मिड्डे, अंकित गुप्ता, सागर निमसरकर ने तैयार किया है. पीयूष कोकाटे ने बताया कि बहुमंजिला इमारत के बीच, डंपिंग साइट, ट्रॉफिक इंटरकनेक्शन आदि वर्टिकल एयर पोल्यूशन के डाटा को इसके जरिये जुटाया जा सकता है. जेड एक्सिस डाटा के आधार पर यह काम करता है. अगर विमानतल के 5 किमी के दायरे में है तो 120 मीटर से अधिक हाइट पर ड्रोन उड़ाने के लिए डीजीसीए की अनुमति लेनी पड़ती है. वैसे यह ड्रोन 500 मीटर वर्टिकल तथा 2 किमी हॉरिजांटल उड़ान भर सकता है. मौसम के मामले में यह तकनीक कारगर साबित हो सकती है.

पटाखा कंपनियों ने अपनाई ग्रीन क्रैकर्स की तकनीक

मांडे ने बताया कि ग्रीन क्रैकर्स की तकनीक से 30 से 40 फीसदी तक कम प्रदूषण होता है. इस तकनीक को सभी बड़ी पटाखा उत्पादक कंपनियों ने अपनाया है. इस बार बाजार में ग्रीन पटाखे उपलब्ध होंगे. चीनी पटाखों में जहरीले रसायन हो सकते हैं. पर सीएसआईआर की तरफ से इसे लेकर कोई अध्ययन नही किया गया है.